राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी साहित्य की समृद्धि में महिला-लेखन

पंजीकरण एवं शोध-पत्र प्रस्तुतीकरण-शुल्क

संगोष्ठी में सहभागिता हेतु
पंजीकरण शुल्क का निर्धारण निम्नांकित है:

क्र सं.	प्रतिभागियों का स्वरूप	पंजीकरण शुल्क
१.	अध्यापकगण	१०००/-
२.	शोध छात्र (आन्तरिक)	२०००/-
	शोध छात्र (वाह्य)	१०००/-
३.	स्नातक/परास्नातक तथा अन्य	५००/-

निर्देश

१. शोध-पत्र वाचन करने अथवा प्रस्तुत करने के इच्छुक प्रतिभागी अपना शोध-पत्र (अथवा सारांश) पूरित पंजीकरण-प्रपत्र तथा शुल्क के साथ अधिकतम ०५ नवम्बर, २०१९ तक अवश्य जमा कर दें।

२. पंजीकरण शुल्क संगोष्ठी स्थल पर भी देय होगा।

३. प्रतिभागियों को किसी प्रकार का यात्रा-भत्ता देय नहीं है।

४. प्रतिभागियों को आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। उनके निवेदन पर निवास की व्यवस्था किये जाने पर ठहरने तथा भोजन का भुगतान उन्हें स्वयं करना होगा।

५. संगोष्ठी के मध्य भोजन की व्यवस्था रहेगी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

आयोजन समिति

प्रधान संरक्षक
श्री जगदीश नारायण मिश्र-कुलाधिपति

संरक्षक
प्रो. पी. एन० पाण्डे-कुलपति

उपसंरक्षक
डॉ. एस.सी. तिवारी-समकुलपति
डॉ. पी.के. तिवारी-सलाहकार कुलाधिपति
श्री आर.एल. विश्वकर्मा-कुलसचिव
श्री मनीष मिश्र-सचिव

संयोजक
डॉ. हिमांशु शेखर सिंह
सह आचार्य-हिन्दी विभाग
मो. नं. : ०९४१५९८४९८३/०८४१८०७८१२३
ई-मेल : himanshushinghkvp@gmail.com

समन्वयक
डॉ. ममता मिश्रा
सह आचार्य-हिन्दी विभाग
मो. : ०९९३५८१४७७९/०७२३४०७५०६८

सह-संयोजक
डॉ. सव्यसाची
सहायक आचार्य-हिन्दी विभाग
मो. : ०८७३६८६१०२०/०९१४०८०६१२१

सह-संयोजक
श्री विष्णु प्रसाद शुक्ल
सहायक आचार्य-हिन्दी विभाग
मो. : ०८००४०७४०३९/०८७०७२६७०२२

राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी साहित्य की समृद्धि में महिला-लेखन

दिनांक : ०८-०९ नवम्बर, २०१९

आयोजक
हिन्दी विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय
प्रयागराज, (उत्तर प्रदेश) २२१५०५

प्रायोजक
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
उ. प्र. भाषा संस्थान, लखनऊ

कार्यक्रम-स्थल
संगोष्ठी-सभागार
गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान
(इलाहाबाद विश्वविद्यालय का संघटक संस्थान)
झूँसी, प्रयागराज-२११०१९ (भारत)

राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी साहित्य की समृद्धि में महिला-लेखन

हिन्दी साहित्येतिहास में महिला-लेखन उपस्थित होते हुए भी आधुनिक काल से पूर्व प्राय: अचर्चित ही रहा है। कतिपय शोध-ग्रन्थों में महिलाओं के लेखन की चर्चा अवश्य हुई है, पर उसे भी पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। स्वतंत्रता के बाद लिखी कतिपय पुस्तकों ने इस चिन्ता को वाणी देते हुए महिलाओं के लेखन की परम्परा को पहचानने पर बल दिया है। जिस हिन्दी भाषी समाज में घरों की आदर्श स्थिति यह मानी जाती रही हो कि स्त्रियों की आवाज न सुनाई पड़े, वहाँ स्त्रियों का कलम उठाना ऐतिहासिक घटना ही थी।

शिक्षा के अँखुए जैसे-जैसे फूटे, महिलाओं ने अपनी अभिव्यक्ति को स्वर देना शुरू किया। अब यह और बात है कि वहाँ भी काफी महिलाएँ गुमनाम होकर ही लिखती रहीं, जिसके उदाहरण अज्ञात हिन्दू महिला, दु:खिनी बाला, चित्रकूट की एक बुढ़िया आदि के रूप में देखे जा सकते हैं। कहीं-कहीं तो 'श्रीमती फलाँ' के भी उदाहरण मिलते हैं। ऐसे में; महिलाओं के हिन्दी-लेखन की पड़ताल और पहचान सहज नहीं है। स्वतंत्रता-पूर्व का लेखन इन चुनौतियों से भरा है।

स्वतत्रंता के बाद का महिला-लेखन परिमाण और गुणवत्ता–दोनों दृष्टियों से न केवल श्लाघनीय है, अपितु सही परिप्रेक्ष्य और पहचान की माँग कर रहा है। विभिन्न विधाओं और दबावों के मध्य आकार लेता हिन्दी का महिला-लेखन हिन्दी साहित्य का एक विशिष्ट अध्याय है, जो आज भी सम्यक् पहचान और परख की अपेक्षा रखता है। इन्हीं लक्ष्यों के साथ नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज के हिन्दी विभाग द्वारा आगामी ८ एवं ९ नवम्बर, २०१९ को एक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जा रही है, जिसमें देश के विभिन्न अंचलों से अधिकारी विद्वानों द्वारा निर्धारित विषय के विभिन्न आयामों पर चर्चा-परिचर्चा की जायेगी। संगोष्ठी में प्रस्तुत स्तरीय शोध-पत्रों को पुस्तकाकार रूप में भी प्रस्तुत किया जाएगा।

यह सारस्वत-यज्ञ जिन सोपानों से आरूढ़ होकर पूर्णता प्राप्त करेगा, उसके प्रमुख प्रस्तावित चरण निम्न हैं:

दिनांक : ०८ नवम्बर, २०१९

उद्घाटन सत्र : प्रात: १० बजे

प्रथम सत्र : स्वतंत्रता-पूर्व महिला लेखन : विविध आयाम

प्रात: ११:३०

द्वितीय सत्र : स्वातंत्र्योत्तर महिला काव्य-लेखन

अपराह्न ०२:०० बजे

दिनांक : ०९ नवम्बर, २०१९

तृतीय सत्र : स्वातंत्र्योत्तर महिला कथा-लेखन

प्रात: १०:०० बजे

चतुर्थ सत्र : स्वातंत्र्योत्तर महिला कथा-काव्येतर लेखन

अपराह्न : १:०० बजे

समापन सत्र : सायं ०३:०० बजे

आमंत्रित शोध-पत्रों का विषय

१. बीसवीं सदी के पूर्व का महिला-लेखन
२. बीसवीं सदी पूर्वार्द्ध का महिला कथा-लेखन
३. बीसवीं सदी पूर्वार्द्ध का महिला काव्य-लेखन
४. बीसवीं सदी पूर्वार्द्ध की महिला पत्रकारिता
५. स्वातंत्र्योत्तर महिला कविता-लेखन
६. स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानी-लेखन
७. स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यास-लेखन
८. स्वातंत्र्योत्तर महिला आत्मकथा-लेखन
९. स्वातंत्र्योत्तर महिला पत्रकारिता-लेखन
१०. स्वातंत्र्योत्तर महिला नाट्य-लेखन
११. स्वातंत्र्योत्तर महिला-लेखन की अन्य विधाएँ
१२. हिन्दी महिला लेखन का भाषिक स्वरूप

इनके अतिरिक्त मुख्य विषय से सम्बन्धित अन्य शोध-पत्र/आलेख भी आमंत्रित हैं।

आमंत्रित प्रमुख वक्तागण

१ प्रो० चितरंजन मिश्र – साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
२ प्रो० सदानन्द गुप्त, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
३ डॉ० राजनारायण शुक्ल, उ० प्र० भाषा संस्थान, लखनऊ।
४ डॉ० उदय प्रताप सिंह, हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयागराज।
५ प्रो० राममोहन पाठक-कुलपति, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई, तमिलनाडु।
६ प्रो० गुलाबचन्द राम जायसवाल – कुलपति, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना।
७ प्रो० योगेन्द्र सिंह – कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया।
८ प्रो० रजनीश शुक्ल – कुलपति, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
९ प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
१० प्रो० रामकली सराफ – अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
११ प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी – चौधरी चरण सिंह वि.वि., मेरठ।
१२ प्रो० माधवेन्द्र पाण्डेय-अरुणाचल प्रदेश।
१३ प्रो० उमापति दीक्षित, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
१४ प्रो० कुमुद शर्मा, नई दिल्ली।
१५ प्रो० स्मिता चतुर्वेदी-इग्नू, नई दिल्ली।
१६ डॉ० चीलुका-बंगलुरू, कर्नाटक।
१७ प्रो० श्रद्धा सिंह – काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
१८ प्रो० चम्पा सिंह – काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
१९ डॉ० नीरजा माधव-वाराणसी
२० प्रो० सुमन जैन – काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
२१ प्रो० आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ० हरी सिंह गौर वि.वि., सागर।
२२ प्रो० उर्मिला पोरवाल, बंगलुरू, कर्नाटक।
२३ प्रो० सुधाकर सिंह, फरीदाबाद, हरियाणा।
२४ डॉ० वसुन्धरा उपाध्याय, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड।
२५ डॉ० विद्याबिन्दु सिंह, लखनऊ।
२६ डॉ० भारती सिंह, लखनऊ।
२७ डॉ० रामसुधार सिंह, वाराणसी।
२८ प्रो० रामकिशोर शर्मा, प्रयागराज।
२९ प्रो० कात्यायनी सिंह, प्रयागराज।
३० प्रो० योगेन्द्र प्रताप सिंह, प्रयागराज।
३१ प्रो० शिव प्रसाद शुक्ल, प्रयागराज।
३२ डॉ० क्षमाशंकर पाण्डेय, प्रयागराज।